प्रातः सभा 31-7-68 ओमशान्ति अ पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। जैसे रूहानी बच्चों को अब रूहानी बाप प्यारा लगता है, वैसे रूहानी बाप को रूहानी बच्चे भी प्यारे लगते हैं। क्योंकि श्रीमत पर सारे विश्व का कल्याण कर रहे हो। कल्याणकारी सभी प्यारे लगते हैं। तुम भी हो आपस में भाई2, तो वह भी जरूर एक दो के प्यारे लगेंगे। बाहर वालों से इतना प्यार नहीं होगा जितना बाप बच्चों का आपस में प्यार होगा। तुम्हारा भी आपस में बहुत2 प्यार चाहिए। यहां ही अगर भाई2 लड़ते-झगड़ते हैं या प्यार नहीं करते हैं तो वह भाई2 नहीं ठहरे। आत्मिक लव होना चाहिए। बाप का भी आत्माओं से लव है ना। तो आत्माओं का भी आपस में बहुत लव होना चाहिए। सतयुग में भी सभी आत्मायें एक दो के प्यारे लगते हैं। शरीर का अभिमान टूट जाता है। तुम भाई2 एक बाप को याद कर सारे विश्व का कल्याण करते हो। अपना कल्याण करते हो तो भाईयों का भी कल्याण करना चाहिए। इसलिए बाप देहअभिमानी से देही अभिमानी बना रहे हैं। वह ब्रदर्स तो आपस में मिकीयत के लिए, हिस्से के लिए लड़ पड़ते हैं। यहां तो लड़ने-झगड़ने की बात ही नहीं। हरेक को डायरेक्ट कनेक्शन रखना पड़ता है। यह है बेहद की बात। योगबल से बाप से वरसा लेना है। लौकिक बाप से स्थूल वरसा लेते हो। तो झगड़ते हैं। यह तो है रूहानी बाप से रूहानी बच्चों को रूहानी वरसा। हर एक को डायरेक्ट बाप से वरसा लेना है। जितना2 व्यक्तिगत बाप को याद करेंगे उतना वरसा मिलेगा। बाप देखेंगे आपसमें लड़ते हैं तो बाप कहेंगे तुम निधणके हो। रूहानी भाई भाई को कब झगड़ना न चाहिए। जिस्म (शरीर) ही नहीं तो लड़ने की बात ही नहीं। अगर भाई2 होकर और फिर आपस में लड़ते-झगड़ते हैं प्यार नहीं करते तो जैसे रावण के बन जाते हैं। वह सभी आसुरी सन्तान ठहरे। दैवी सन्तान और आसुरी सन्तान में जैसे कि फर्क ही नहीं रहता। क्योंकि देहअभिमानी बनकर ही लड़ते हैं। आत्मा आत्मा से तो लड़ती नहीं है। इसलिए बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे आपस में लूण-पानी न हो। होते हैं तब तो समझाया जाता है। बाप कहेंगे यह तो देह अभिमानी बच्चे हैं। रावण के बच्चे हमारे तो नहीं है। क्योंकि आपस में लूनपानी हो रहते हैं। तुम 2। जन्म क्षीर खण्ड में रहते हो। रावण के बच्चे लूणपानी हो रहते हैं। इसमें तो देहीअभिमानी बन रहना है। आपस में नहीं बनती है तो उस समय के लिए उनको रावण सम्प्रदाय कहा जाता है। आपस में लूणपानी होने से बाप की पत गवांवेंगे। भल ईश्वरीय सन्तान कहते हैं परन्तु आसुरी गुण हैं। वह होते हैं देह-अभिमान में। देही अभिमानी में ईश्वरीयगुण होते हैं। यहां तो तुम ईश्वरीय गुण धारण करेंगे तब ही बाप साथ में ले जावेंगे। बाप को मालूम पड़ता है बच्चे देह अभिमान में आकर आपस में लूण पानी हो रहते हैं। वह तो ईश्वरीय बच्चे कहलाये न सके। कितना अपन को घाटा डालते हैं। माया के वस हो जाते हैं। अच्छे2 बच्चे भी लूण-पानी हो रहते। लूण-पानी तो सारी दुनिया है। फिर ईश्वरीय सन्तान भी लूनपानी हो तो बाकी उन में फर्क क्या रहा। वह तो बाप की निन्दा कराते हैं। बापकी भी निन्दा कराने वाले, लूण-पानी होने वाले ठौर न पायें। वह आसुरी बन जाते हैं। उनको नास्तिक भी कहा जाये। आस्तिक होने से कब लड़ न सके। न लड़ना यहां ही सीखना है। जो फिर 2। जन्म आपस में प्रेम रहेगा। बाप के बच्चे कहलाये, फिर भाई2 नहीं बनते तो वह आसुरी सम्प्रदाय ठहरे। बाप बच्चों को समझाने लिए मुरली चलाते हैं। देह-अभिमान के कारण उन्हों को मालूम नहीं पड़ता है। माया बड़ी तीखी है। जैसे चूहा ऐसा काटता है जो मालूम भी नहीं पड़ता है। माया भी बड़ी2 मीठी2 फूंक देऔर काट लेती है। पता भी नहीं पड़ता है। आपस में रूसना करना, आसुरी सम्प्रदाय का काम है। बहुत सेन्टर्स में लूणपानी हो रहते हैं। अभी परफेक्ट तो कोई नहीं बने हैं। माया वार करती रहती है। ब्राह्मणियां जो सेन्टर्स के हेड हो रही है उनके साथ में जो दूसरे मददगार रहते हैं उनके साथ भी रूहानी प्यार चाहिए। रूहानीप्रेम न होने से ठक2 चलती है। तो गोया असुरीसम्प्रदाय ठहरे। तुम्हारा भाई2 का आपस में प्यार रहे तब कर्मातीत अवस्था हो। शरीर होते भी भाई2 का प्रेम हो। सेन्टर के बड़ी ब्राह्मणियां वा ब्राह्मण होते हैं उनको फिर दूसरे सहायक मिलते हैं तो उनको बहुत प्यार रिगार्ड से चलाना है। प्यार नहीं है तो जरूर देहअभिमान

31.7.68

है। भाई2 हो रहेंगे तो आपस में प्यार से चलेंगे। कब आसुरी ख्यालात से एकदो को देखना न चाहिए। कोई2को बड़ा नशा चढ़ जाता है। बाप को तो कब नशा नहीं चढ़ता। इतना बड़ा बेहद का बाप बच्चों को कहते हैं नमस्ते। मैं तुम्हारा आज्ञाकारी सर्वेन्ट हूं। तो तुम बच्चों को भी आपसमें बहुत प्रेम से रहना चाहिए। दूसरे जो भी साथ में रहते हैं उन पर कब गुस्सा नहीं, प्यार से सम्भालना है। खान-पान भी सम्भाल रखनी है। अपन को बड़ा न समझना है। आपस में प्रेम से यहां चलेंगे तो वह प्रेम साथ चलेगा। कोई2 ब्राह्मणियां अपन कोबहुत ऊंच समझ दूसरों को नीच समझ कर चलती है। देही अभिमानी में ऊंच नीच नहीं रहना होताहै। बहुत प्रेम से। वहां शेर बकरी भल है वह ऊंच वह नीच परन्तु उनका भी आपस मे लव रहता है। बाप प्रेम का सागर है तो सभी को प्यार से ही चलावेंगे। प्यार ही सिखलावेंगे। कोई 2 ब्राह्मणियां गुस्सा करती है, कोई बिमार है तो उनको दवाई नहीं करती, खाना पूरा नहींखिलाती। बाबा के पास रिपोर्ट आती है। तो बाबा मुरली से ही सब को समझा देते हैं। खबरदार करते हैं। ऐसे2 कर्तव्यकरने सेतो गोया तुम आसुरी सम्प्रदाय हो। बाप सिखलाते हैं आपस में प्रेम सीखो। नहीं तो निन्दा करावेंगे। किसको दुःख न देना है। सुख दु देना है अपना अहंकार न रहना चाहिए। मैं पढ़ाने वाली हूं। नहीं। बाबा तो स्टुडन्ट को भी नमस्ते करते हैं ना। अपने को ऊंच दूसरे को नीच कब नहीं समझना। नहीं तोदुःख फील होता है। अपन को सुखीरखते हैं दूसरे को कुछ देते नहीं। बाबा के पास सभी समाचार आते हैं। ऐसे जो अपन को ऊंच समझ रहते हैं उनकापद नीच हो पड़ता। ऐसी अवस्था मे ऊंच पद पा न सकेंगे। किसको तंग न करना चाहिए। बाबा का ही भण्डारा समझना चाहिए। हमारा भण्डारा नहीं है। शिव बाबा का भण्डारा है तोसदैव भरपूर है। कुछ भी जरूरत है तो बाबा के पास लिख कर मंगाये सकते हो। बाबा हम इनको अर्पेट नहीं कर सकते हैं। बाबा मदद देंगे। ब्राह्मणियों को बाबा सावधान कर रहे है। बहुत हैं जो अपन को ऊंच समझ दूसरे की परवरिस नहीं करती है। अपनी बहुत प्रवरिश करतीहै। दुसरे कांकम करती है। बिमार है उसकी दवाई न करना, न प्यार करना गोया लूणपानी है। उस समय आसुरी सम्प्रदाय है। आपस में प्यार, देवी गुण होनी चाहिए। कोई न कोई डिफ्टस रहते हैं। क्योंकि बाप को याद नहीं करते हैं। फूल नहीं बनते नहीं हैं। कांटे हो रहते हैं। दूसरे को दुःख देना कांटा बनना है। बाप तो सभी को सावधानी देते हैं। नहीं तो मुफ्त अपना पद भ्रष्ट करेंगे। बाप तो समझाने का हकदार है। कहेंगे पच्छर न बनो। सर्विस एबुल बनो। सर्विस नहीं करते हैं, यज्ञ से खाते रहते हैं लड़ते रहते तो जरूर पद भ्रष्ट हो जावेंगा। बाप तो सहन कर न सके कि यह जाकर फोर्थ क्लास के दासी आद बने। तो बाबा मुरली में सावधानी देते हैं। अगर समझते हैं और क्या कहेंगे, यह भी देह अभिमान। बाप नहीं तो बच्चों को कैसे सावधान करेंगे। मुरली द्वारा टेप द्वारा समझावेंगे। फिर टेलीविजन होगा तोसामने खड़े होकर कहेंगे। नाम भी लेंगे तुम फ्लाने2 आपस में लूणपानी हो लड़ते हो। लुणपानी होने सेसर्विस को धोखा आ जावेगा। देह अभिमान से सर्विस अच्छी नहीं होती है। क्षीर खण्ड होने से सर्विस अच्छी होगी। बाप को तो सर्विस का फरण रहता है। देहअभिमानी आसुरी सम्प्रदाय नुकसान कर देते हैं। माया ऐसा माथा मुड़ती है जो पता ही नहीं पड़ता। अपने दिलसे पूछना है हमारा आपस में प्रेम है। या नहीं। प्रेम के सागर के बच्चेहो तो प्रेम से भरपूर गंगा बनना चाहिए। लड़ना झगड़ना उल्टा सुल्टा बोलना इससे तो न बोलना अच्छा है। हियर नो ईवील ··· तुम असुर बन जाते हो तो दूसरों को असुर न बनाना चाहिए। बाबा सिध कर बताते हैं इन में क्रोध का भूत है। यह लव नहीं है। इसलिए बाबाकहते हैं रोज अपना पोताजे निकालो। आसुरी× आसुरी चलन सुधरतो नहीं तो फिर क्या नतीजा निकलेगा। क्या पद पावेंगे। कहां विश्व का मालिककहां चण्डाल का जन्म। चण्डाल भी बनते हैं ना। मसाने(श्मशान) भी राजाओं के अलग2 होते हैं प्रजा के अलग होते हैं। चण्डालों= चण्डालों का भी परिवार होगा। फर्क तो है ना। बाप समझाते हैं कोई सर्विस न करेंगे तो यह हालत हो जावेगी। कम कम पद। सा० तो सभी को होता ही है। तुमको भी तुमको अपने

31-7-68 3 31-7-68

पढ़ाई का सा० होता है। सा० हाने बाद ही फिर ट्रन्सफर होते हैं। फिर नई दुनिया में आ जावेंगे। पिछाड़ी में सा० होगा कौन2 किस मार्कस से पास हुआ फिर रोयेंगे पीटेंगे सजा भी खावेंगे। पछतावेंगे बाबा का कहना न माना। बाबा ने तो बार2 समझाया है कोई भी आसुरी गुण न होनी चाहिए। जिनमें दैवी गुण है उनको ऐसा आप समान बनाना चाहिए। बाप को याद करना तो बहुत ही सहज है। अलफ और बे। अलफ को याद करने से आपे ही याद आ जावेंगी। अलफ माना बाप। बे बादशाही। तो बच्चों को नशा रहना चाहिए। अगर आत्मा में लूण पानी होगा फिर ईश्वरीय औलाद कैसे समझेंगे। बाबा समझेंगे यह आसुरी औलाद है। माया ने नाक से पकड़ लिया है। उनको पता भी नहीं पड़ता। सारी अवस्था डांवा डोल, पद कम हो पड़ेगा। प्रेम से सिखाने की कोशिश करनी चाहिए। प्रेम की दृष्टि रहनी चाहिए। बाप प्रेम का सागर है तो बच्चों को भी खैंचते है ना। तो तुमको भी प्रेम का सागर बनना है। यह तो बच्चे जानते हैं यह सारी दुनिया अछूतों की है। मार खाते हैं ना। नानक ने भी कहा है असंख्य चोर ··· बाबा को छोटेपन मे यह सभी याद था। ग्रन्थ सारा पढ़ता था। गांवरों मे रहते थे। यह सभी गांवरा है ना। अभी तुम गांवरे से कहां चलते हो। यह है हेल नर्क। वह है हैविन स्वर्ग। इतना ऊंच ते ऊंच कैसे छीछी गांवरों में आते हैं। हेल में आते हैं। बच्चों को बहुत ही ~~प्यार~~ प्यार से समझाते हैं। बाबा कोई अन्तर्यामी जानी जाननहार नहीं है। वह तो अच्छी ही मत देते हैं। ईश्वरीय मत मिलने से तुम फूल बनते हो। सभी सहुलीयते तुमको देते हैं। देवताओं में प्यार होता है ना। तो वह अवस्था जमानी चाहिए। बहुत ही प्यार से चलना है। बाप आकर बच्चों की रूहानी सेवा करते हैं। अहंकार नही है। ड्रामा में सेवा करने लिए बांधा हुआ है। मेरा पार्ट है। वह करना ही है। बच्चों को समझाते2 हैं आसुरी गुणों से दैवी गुणों में ले आता हूं। इस समय तुमको सारी नालेज है। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को समझते हो। फिर देवता बन गये तो नालेज नहीं रहेंगे। वहां तो देवी प्यार ही रहता है। तो बच्चों को अब दैवी गुण भी बहुत धारण करनी है। दुनिया में कितना अज्ञान भरा हुआ है। कुछ भी नहीं जानते। बड़े2 शंकराचार्य अपने को बड़ा पूज्य समझते हैं। और फिर शिव की पूजा करते रहते हैं। तो उनको पूज्य कैसे कहेंगे। पूज्य तो कब पूजा कर न सके। पूज्य होते ही हैं सत, युग में। पुजारी होते हैं कलियुग में। अभी तुम पूज्य बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। इस संगम युग की ही महिमा है। बाप भी भारत में ही आते हैं। शिव जयन्ति मनाते हैं परन्तु वह कौन है, कैसे कब आते हैं क्या करते हैं यह कुछ भी नहीं जानते। तुम बच्चे भी अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। जो नहीं जानते हैं वह किसको समझा भी नहीं सकते। फिर पद भी कम हो जावेगा। कम पढ़ने वालों की लक्षण भी खराब होते हैं। कोई तो सदैव परजेन्ट हैं। कोई अपसेन्ट। परजेन्ट वह है जो सदैव बाप को याद कर स्वदर्शनचक्र फिराते रहते हैं। बाप कहते हैं उठते-बैठते तुम अपने को स्वदर्शनचक्रधारी समझो। भूलते हो तो अपसेन्ट हो जाते हो। सदैव के परजेन्ट होंगे तब ही ऊंच पद पावेंगे। भूल जावेंगे तो कम पद हो जावेगा। बाप जानते हैं अभी टाईम पड़ा है। ऊंच पद पाने वालों को बुधि में यह चक्र फिरता रहता होगा। स्वदर्शनचक्रधारी होकर ही शरीर छोड़ना है। शिव बाबा की याद हो मुख में ज्ञान हो तब प्राण तन से निकले। अगर कोई चीज से प्रीत होगी तो अन्तकाल भी वह याद आती रहेगी। खाने की चीज में लोभ होगा तो मरने समय भी वह चीजें याद आती रहेंगी। यह खाऊं यह खाऊं। फिर पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। बाप तो कहते हैं स्वदर्शनचक्रधारी हो मरो। और कुछ भी याद न आये। बिगर कोई सम्बन्ध जैसे आत्मा आई है वैसे ही फिर जाना है। लोभ भी कम नहीं। फिर पिछाड़ी समय वह याद आता रहेगा। न मिला तो तो उस आशा मे मर जावेगा। इसलिए लोभ आदि भी न होना चाहिए। बाप समझाते तो बहुत हैं परन्तु समझने वाला कोई समझे। बाप को याद करते2 एकदम सीने से लगा दो। बाबा। ओ बाबा बाबा। मुख से कहना भी नहीं है। अजपा~~जाप~~=याद। बाप की ही याद में कर्मातीत अवस्था में शरीर छूटे तब यह पद पा सकते हैं। कई तो समझते हैं नहीं कि माया ने हमको पकड़ा हुआ है। रूसना भी बड़ा नुकसान कारी है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमोर्निंग और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।